

## पद २६३

(राग: यमन - ताल: त्रिताल)

कुबरी कंस की दासी । वोसंग जावयाको जान । ऊधो हमसे बने  
हैं बेईमान ॥ध्रु.॥ हम जाने ऐसी ना भयोगी । बोलत मधुर  
वचन ॥१॥ मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी । गोपी ब्रिजको जीवन  
प्राण ॥२॥